नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भविष्य की प्यास बुझाने की तैयारी

तेजी से बढ़ते शहरीकरण और जल संकट की आशंकाओं के बीच, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा इंदौर में नर्मदा परियोजना के चौथे चरण का शिलान्यास एक दूरदर्शी और समयोचित पहल के रूप में सामने आया है. हाल ही में दशहरा मैदान में हुए इस कार्यक्रम ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि राज्य सरकार अब केवल वर्तमान जरूरतों तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि वर्ष 2040 और उससे आगे की चुनौतियों को ध्यान में रखकर जल प्रबंधन की ठोस आधारशिला रख रही है.

करीब 1,356 करोड़ रुपये की लागत से तैयार होने वाली यह परियोजना सिर्फ एक बुनियादी ढांचा विकास नहीं, बल्कि एक समग्र शहरी जल प्रबंधन मॉडल है. इंदौर जैसे तेजी से विस्तार करते शहर के लिए सातों दिन जल आपूर्ति सुनिश्चित करना किसी भी प्रशासन के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन इस योजना के माध्यम से इसे संभव बनाने का लक्ष्य तय किया गया है. खास बात यह है कि इस परियोजना का लाभ केवल वर्तमान नगर निगम सीमा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हाल ही में शामिल किए गए 29 गांवों और आसपास के क्षेत्रों तक भी पहुंचेगा. यह कदम समावेशी विकास की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है.

तकनीकी दृष्टि से भी यह परियोजना अत्यंत महत्वपूर्ण है. 'अमृत 2.0' मिशन के तहत स्मार्ट मॉनिटरिंग और स्मार्ट वॉटर मीटर जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग जल प्रबंधन को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाएगा. इससे न केवल पानी की बर्बादी पर नियंत्रण होगा, बल्कि लीकेज और अनियमितताओं की समय पर पहचान भी संभव हो सकेगी. आज के दौर में, जब जल संसाधनों पर दबाव लगातार बढ़ रहा है, ऐसी तकनीकी पहल अनिवार्य हो गई हैं.

परियोजना के अंतर्गत 1650 एमएलडी का इनटेक वेल, 400 एमएलडी का वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, 39 किलोमीटर लंबी ग्रेविटी पाइपलाइन, और 2,870 मीटर लंबी टनल जैसे निर्माण कार्य इस बात का प्रमाण हैं कि यह योजना केवल कागजों तक सीमित नहीं है, बल्कि ठोस और व्यापक क्रियान्वयन की दिशा में अग्रसर है. इसके साथ ही 40 नई पानी की टंकियों का निर्माण और 75 पुरानी टंकियों का उन्नयन शहर की जल भंडारण क्षमता को मजबूत करेगा.

हालांकि, किसी भी बड़ी परियोजना की सफलता केवल उसके निर्माण तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसके संचालन और रखरखाव पर भी निर्भर करती है. स्मार्ट तकनीकों के उपयोग के साथ-साथ नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है. जल संरक्षण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी का भाव विकसित किए बिना, कोई भी योजना लंबे समय तक प्रभावी नहीं रह सकती.

मुख्यमंत्री द्वारा इंदौर को 'जल नायक' शहर बनाने का संकल्प और इंदौर-उज्जैन मेट्रोपॉलिटन रीजन को विकसित करने की परिकल्पना, राज्य के शहरी विकास के व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाती है. साथ ही, सिरपुर में नए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का उद्घाटन यह बताता है कि सरकार जल आपूर्ति के साथ-साथ जल पुनर्चक्रण पर भी ध्यान दे रही है. कुल मिलाकर नर्मदा परियोजना का यह चौथा चरण केवल एक विकास परियोजना नहीं, बल्कि भविष्य की प्यास बुझाने की ठोस रणनीति है. यदि इसे निर्धारित समय सीमा में प्रभावी ढंग से पूरा किया गया और नागरिक सहभागिता सुनिश्चित की गई, तो इंदौर न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश के लिए जल प्रबंधन का एक आदर्श मॉडल बन सकता है. लेकिन इसमें हमें यह भी देखना होगा कि जिस नर्मदा से हम पानी ला रहे है उसका भी संरक्षण और संवर्धन हो .

युद्ध पिपासु ताकतें मर्चेंट नेवी जहाजों को बख्शें

समुद्री व्यापार सुरक्षा के लिए वैश्विक नीति बनाएं

समुद्री व्यापार की सुरक्षा के लिए नई वैश्विक सहमति का गठन करना आवश्यक है. लेकिन यह तभी मुमकिन हो सकेगा जब सुपरपावरों की गुंडागर्दी व वीटो पावर पर विराम लगे, जब आवश्यक चीजों की कमी पड़ जाती है, तो विकासशील देशों को उसका व महंगाई का सबसे अधिक खामियाजा भुगतना पड़ता है, इसलिए उन्हें ही मर्चेंट व कमर्शियल जहाजों की आजादी के संदर्भ में पहल करनी चाहिए.

यह बहुत बड़ी राहत है कि ईरान ने भारत को स्ट्रेट ऑफ हार्मूज इस्तेमाल करने की अनुमति दी है, जिससे न सिर्फ रुके हुए भारतीय झंडे वाले 20 कार्गो जहाज उसे पार कर लेंगे बल्कि यह उम्मीद भी बंधी है कि अन्य 18 एलपीजी टैंकर जंग-प्रभावित 52-किमी स्ट्रेट से कार्गो लोड करने के लिए जा सकेंगे, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागाची ने भारत को 'दोस्त राष्ट्रों' की सूची में शामिल करते हुए, दोस्तों को स्ट्रेट का प्रयोग करने की इजाजत दी है.

हालांकि यह सभी 20 कार्गो जहाज भारत नहीं आएंगे, क्योंकि कुछ को अन्य बंदरगाहों पर जाना है, लेकिन जितने भी आएंगे, उनसे भारत में एलपीजी, एलएनजी व क्रूड की उपलब्धता में सुधार आएगा. अगर 18 एलपीजी टैंकर भी भरकर आ जाते हैं, तो कुकिंग गैस की एक सप्ताह की पूर्ति हो जाएगी, क्योंकि उनमें लगभग 8 लाख टन गैस आती है. अमेरिका, यूक्रेन, ईरान आदि मर्चेंट जहाजों को निशाना बना रहे हैं, जो कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए खतरनाक है. नियम-आधारित विश्व व्यवस्था का कोई अर्थ रह नहीं गया है, जिसकी लाठी उसकी भैंस का दौर लौट आया है. जैसा कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति को अगवा करना, क्यूबा की घेराबंदी करना, ईरान पर बेमतलब युद्ध थोपना, यूक्रेन पर युद्ध लादना, ताइवान पर कब्जा करने की धमकी, आदि से स्पष्ट है, साथ ही वीटो के अधिकार ने संयुक्त राष्ट्र को ऐसा बूढ़ा शेर बनाकर रख दिया है, जिसके पास दांत न खाने के लिए हैं और न दिखाने के लिए, आज संयुक्त राष्ट्र में ऐसे लोगों का जमावड़ा है, जो अकेले कुछ नहीं कर सकते और मिलकर तय करते हैं कि कुछ नहीं किया जा सकता.

इसके बावजूद ऐसी विश्व व्यवस्था की उम्मीद की जा सकती है, जिसमें युद्ध के पागलपन के दौरान भी मर्चेंट जहाजों को बख्श दिया जाए ताकि जिनका जंग से कुछ लेना-देना नहीं, उनकी अर्थव्यवस्था सुरक्षित रहे और उनके लोग चैन की सांस ले सकें. ईरान पर अमेरिका व इजराइल द्वारा थोपी गई अवैध जंग के पहले दो सप्ताह के दौरान 16 कार्गो जहाजों को निशाना बनाया गया, जिनमें तेल टैंकर भी शामिल थे. इससे डरकर सैंकड़ों जहाजों ने खाड़ी में लंगर डाल दिए. इस बीच तेल, गैस, खाद, एल्यूमिनियम, सल्फर, हीलियम और ऐसी ही अन्य चीजों की दुनियाभर में कमी पड़ गई है. समुद्री व्यापार को रेहन पर रख दिया गया है. उत्तर में यूक्रेन ने रूस के 40 प्रतिशत तेल निर्यात उपकरण को निर्षक्रय कर दिया है. बंदरगाहों व पाइपलाइनों पर यूक्रेन ने जो हमले किए हैं उससे रूस के तेल फ्लो में 2 मिलियन बैरल प्रति दिन की कमी आई है. उधर अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति को अगवा करने से पहले जो भी तेल टैंकर कराकास से निकलता था, उसे अपनी मिसाइलों का निशाना बनाया.

अब अमेरिका क्यूबा की घेरेबंदी किए हुए है और किसी भी कार्गो जहाज को आने-जाने नहीं दे रहा है, जिससे क्यूबा में अंधेरा है और आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी हो रही है. अगर मर्चेंट जहाज सैन्य ऑपरेशन में शामिल नहीं हैं तो उन पर हमला नहीं किया जाना चाहिए. ऐसा इसलिए कि पानी के जहाज ही तो आधुनिक संसार को जीवित रखे हुए हैं. युद्ध के दौरान मर्चेंट जहाजों को निशाना बनाने के जो खराब परिणाम निकलते हैं वह दुनिया भूल गई है, दूसरे विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन ने 2,426 मर्चेंट जहाज गंवाए थे, अमेरिका ने 1,768 जापान ने 2,346 मर्चेंट जहाज खोए. युद्ध के अंत होने पर उसके पास एक भी जहाज ऐसा नहीं बचा था, जिसकी क्षमता 1,000 टन से अधिक की हो. उस समय सिर्फ सेना के पास ही बड़े जहाजों को डूबोने की ताकत थी. आज तो यह काम बहुत आसान हो गया है. ईरान, यूक्रेन व ह्वती ने दिखाया है कि चंद हजार डॉलर के सस्ते ड्रोन से भी घातक वार करके विशाल जहाज को समुद्र में दफन किया जा सकता है.

- डॉ. अनिता राठौर

दलाल या संदेशवाहक है पाकिस्तान

पाकिस्तान नहीं चाहता कि सऊदी अरब उसे अपने साथ लेकर ईरान से लड़ने को मजबूर करे इसलिए उसने मध्यस्थ बनना उचित समझा.

आर्थिक दृष्टि से बेहद कमजोर और विश्व बैंक व आईएमएफ के कर्ज तथा सऊदी अरब की मेहरबानी से चल रहा पाकिस्तान अपनी औकात से ज्यादा आगे बढ़कर अमेरिका व इजराइल के ईरान से चल रहे युद्ध में मध्यस्थ बन बैठा. देखा जाए तो उसकी भूमिका ऐसी बिल्कुल नहीं है कि किसी भी पक्ष पर दबाव बनाकर समझौता करवा दे. इसलिए भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर की प्रतिक्रिया बिल्कुल स्पष्ट है कि भारत किसी के पीछे भागने वाला दलाल नहीं है. पाकिस्तान मिडलमैन या दलाल की भूमिका सिर्फ इस तरह निभा रहा है कि अमेरिका का 15 सूत्रीय फार्मूले वाला संदेश ईरान तक पहुंचा दे. ईरान ने इस संदेश को पूरी तरह ठुकरा दिया. संदेशवाहक या डाकिए के अलावा उसकी कोई भूमिका नहीं है. यदि पाकिस्तान की मध्यस्थता विफल हो जाती है तो यही संदेश जाएगा कि शहबाज शरीफ और सेनाध्यक्ष मुनीर पूरी तरह नाकामयाब रहे और किसी भी पक्ष ने उनको महत्व नहीं दिया. मान लिया जाए कि पाकिस्तान समझौता कराने में सफल हुआ तो इसका लाभभारत को मिलेगा. उनका आयात-निर्यात, हवाई उड़ाने, खाड़ी देशों में रहने वाले भारतीयों की सुरक्षा सरीखे सारे मामले अनुकूल हो जाएंगे. अब मुद्दा यह है कि पाकिस्तान ने बिचौलिया बनने की पहल क्यों की? पहली वजह यह है कि, ईरान के साथ उसकी सीमा लगी है. युध्द की तबाही वहां तक आ सकती है. पाकिस्तान नहीं चाहता कि सऊदी अरब उसे अपने साथ लेकर ईरान से लड़ने को मजबूर करे इसलिए उसने मध्यस्थ बनना उचित समझा. पाकिस्तान व सऊदी अरब में समझौता है कि उनमें से किसी एक देश पर हमला दूसरे पर हमला माना जाएगा. भारत कूटनीति में आगे है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मालवा- निमाड़ की डायरी

शिक्षकों की आवाज बनकर उभरे पटेल-चौहान

संजय व्यास

अंचल के 2 सांसद इन दिनों नौकरी के संकट से जूझ रहे शिक्षकों की आवाज बनकर उभरे हैं. इन शिक्षकों में तो कई ऐसे हैं जिसका सेवा काल करीब ढाई दशक हो चुका है. इतने अनुभव के बाद भी उन पर अब सेवा बरकरारी के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करने की तलवार लटक रही है. उनकी पीड़ा को देखते हुए संसद में क्षेत्र के खरगोन-बड़वानी व आलीराजपुर सांसद गजेंद्र पटेल और अनिता चौहान ने उक्त निर्णय पर सरकार से पुनर्विचार करने की बात रखी. उन्होंने सदन को अवगत कराया कि जिन शिक्षकों ने लंबे समय से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए अपना अनुभव और योगदान दिया है, उन्हें बार-बार परीक्षा के दायरे में लाना न्यायसंगत नहीं है. बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षक हैं जिनकी नियुक्ति शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू होने से पूर्व नियमानुसार की गई थी, उस समय टीईटी का कोई प्रावधान नहीं था. इन शिक्षकों की नियुक्ति तत्कालीन एनसीटीई के नियमों के अंतर्गत पूरी तरह वैध रूप से हुई थी और वे वर्षों से निरंतर अपनी सेवाएं दे रहे हैं.

वर्तमान में टीईटी को अनिवार्य किए जाने से उन्हें व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनके मनोबल पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है. ऐसी परिस्थितियों में टीईटी की अनिवार्यता से राहत प्रदान करना न्यायसंगत और आवश्यक है. उल्लेखनीय है कि लाख के करीब शिक्षक 1998 से अब तक सेवा में आए हैं. इस परीक्षा से 5 साल सेवा काल शेष वाले शिक्षकों को छूट दी गई है. इसके बावजूद करीब 60 हजार से ज्यादा शिक्षकों के सामने टीईटी का संकट मुंह बाए खड़ा है. सांसदों के संसद में उनकी आवाज उठाने से उन्हें उम्मीद की किरण नजर आ रही है.

हालांकि सरकार ने परीक्षा की अनिवार्यता सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर की है. अब देखते हैं सदन में रखी गई पुनर्विचार की बात पर सरकार क्या रास्ता निकालती है और प्रभावित शिक्षकों को राहत प्रदान कर पाती है या नहीं.

वरिष्ठों की खींचतान, भुगत रहे कार्यकर्ता

जनजातीय मंत्री विजय शाह की कोशिशों के बाद भी खंडवा जिले के भाजपा नेताओं की खींचतान नजर आ ही जाती है. ताजा मामला एल्डर मैन की नियुक्तियों का है. सांसद, जिले के विधायकों और जिला संगठन के एकमत न होने का खामियाजा लंबे समय से राजनीतिक नियुक्तियों के लिए प्रतीक्षारत कार्यकर्ताओं को उठाना पड़ा है. निमाड़ अंचल में जहां पर नगर निकायों में एल्डरमैन की सूची जारी हो गई, वहीं खंडवा के इससे वंचित रहने से दावेदारों को मायूसी का सामना करना पड़ा है. जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ नेताओं की अपने समर्थकों के नाम शामिल करवाने की जिद के कारण खंडवा जिले के नगर निकायों में एल्डर मैनों का फैसला फिलहाल नहीं हो पाया. अब अगली सूची के आने तक मुंदी, हरसूद, पंधाना और ओंकारेश्वर के दावेदार भोपाल की ओर टकटकी लगाए बैठे हैं.

नियुक्तियों के बाद भी असमंजस

रतलाम जिले में प्रशासनिक गड़बड़ी के कारण एल्डर मैनों के नामों पर असमंजस बरकरार है. शासन द्वारा नगर परिषदों के लिए जारी एल्डरमैन सूची में रतलाम जिले से चौंकाने वाली विसंगतियां सामने आई हैं. सूची में कई ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां एल्डरमैन के नाम, उनके पिता के नाम और सरनेम आपस में मेल नहीं खा रहे हैं, जिससे सूची की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो गए हैं. इन्हें पुलिस वेरिफिकेशन के बाद ही पदभार ग्रहण का अधिकार मिलेगा. जब घोषित नामों में पिता का नाम, सरनेम ही मेल नहीं खाएगा तो पुलिस वेरिफिकेशन कैसे होगा. अपने दायित्व ग्रहण करने में आ रही अड़चनों से बेचैनी बनी हुई है. यह चर्चा भी तेज हो गई है कि ये त्रुटियां किस स्तर पर हुई हैं—स्थानीय निकाय, जिला प्रशासन या शासन स्तर पर. एल्डरमैन सूची का लंबे समय से इंतजार कर रहे भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं में इस मामले को लेकर भारी नाराजगी देखी जा रही है.

निशानेबाज

क्या है 'डेलुलु, सोलुलु व ट्रुलुलु' जेन जी की भाषा का एक पहलू

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, 1997 से 2012 के बीच जन्म लेने वाली पीढ़ी को जेन जी कहते हैं. इस पीढ़ी ने अपनी एक खास शब्दावलि विकसित की है. ऐसे अजीबोगरीब शब्द किसी शब्दकोश या डिक्शनरी में आपको नहीं मिलेंगे. ये शब्द हैं- डेलुलु, सोलुलु और ट्रुलुलु'. डेलुलु शब्द डिल्यूजन का संक्षिप्त रूप है. इसमें युवा अपने गुंताड़े में रहता है जैसे कि दूसरे दिन परीक्षा होने वाली है लेकिन पढ़ाई आधी-अधूरी हुई है फिर भी वह आराम से बैठकर कहता है कोई फिक्र नहीं, कल का पेपर इजी आएगा. यही डेलुलु है मतलब भ्रामक उम्मीद या झूठी आशा! जेन जी मानकर चलती है कि डेलुलु ही सोलुलु है. सोलुलु का मतलब है सोल्यूशन या हल. यह मन को समझाने या आत्मविश्वास पक्का करने की बात है कि मैं यह कर सकता हूं. यदि बिना तैयारी के ही सफलता मिल गई और अंदाजी टोला लग गया तो युवा कहता है कि ट्रुलुलु हो गया अर्थात जो सोचा वह सच साबित हुआ.

इस तरह यह तीनों शब्द जेन जी की मनस्थितियों को दर्शाते हैं.'

हमने कहा, 'स्लैंग लैंग्वेज इसे ही कहते हैं यह कैम्पस और चाय टपरी पर चल निकली है. इसके कुछ और नमूने हैं-कान के नीचे बजा दूंगा! ज्यादा बोलबचन मत सुना. ये बता कुछ लोचा है क्या? मुंबईया भाषा में क्या मांगता का मतलब है कि आपको क्या चाहिए? लोग कहते हैं- तेरा डगला (कुर्ता) अच्छा सिएला है? किसी को बातचीत में टोका जाता है- कायकू खाली-पीली बोम मारता! फालतू का लफड़ा नहीं मांगता. ए भाई, तू निकल ले इधर से! किसी परिचित की दुकान पर गए तो वह बोलेगा- इनके वास्ते लाला की चाय लाना. ऐसी चाय तुरंत आ जाएगी. अगर उसने कहा कि नाना की चाय लाना तो ऐसी चाय कभी नहीं आएगी. यह कोडवर्ड का कमाल है जिसमें पैसा रोकड़ा कहलाता है. लाख और करोड़ को पेटी और खोखा कहते हैं. जिसने मुंबई में बोलचाल का यह तरीका सीख डाला, उसकी लाइफ हो गई झिंगा-लाला !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12214

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. बंद करना, मीचना 2. जुल्म, अन्याय, अत्याचार (उर्दू) 4. झोंका खिलाना, लपकाना, आगे बढ़ाना 5. गिरना, अधोगति, अवनति 7. फूलों का हार, लड़ी 9. बबूल नामक वृक्ष 11. मानचित्र, भवन आदि का रेखा चित्र (उर्दू) 12. वेदव्यास का एक नाम (सं.) 13. शताब्दी, सैकड़ा (उर्दू) 14. तलवार (सं.) 15. आकृति, स्वरूप, डीलडौल 17. बहुत छोटा टुकड़ा, रवा 18. ऊंट, बैल आदि के नाक में बंधी हुई रस्सी 20. परिमाण, मिकदार, बारहखड़ी लिखते समय वह स्वर-चिन्ह या रेखा जो शब्दों के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है

बाएं से दाएं

1. मुकदमे के सारे इकट्ठे नत्थी कागजात, फाइल 3. विलाप करना 6. घायल किया या मार डाला हुआ 7. अधीनस्थ कर्मचारी (उर्दू) 8. चमकने वाला, चमकदार 10. जंगल, घर (सं.) 12. पहनावा, वस्त्र, वेशविन्यास 13. सीमा (उर्दू) 15. अभ्यस्त, जिसे किसी चीज की लत लग गई हो (उर्दू) 16. राक्षसी 19. वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो (सं.) 21. डोरी, सूत आदि को बटकर बनाई हुई रज्जू 22. रक्षा, बचाव (सं.) 23. लंबा तथा नुकीला कांटा (सं.)

Solution 12213

चि	रं	त	न	■	भा	वि	क
ढ़ा	■	क	म	ला	■	त	मा
ना	ख	■	न	ख	लि	स्ता	न
■	दा	म	■	ना	प	■	■
अ	न	हि	त	■	ट	ख	ना
मा	■	■	नि	■	ना	■	ड़ी
न	■	ता	क	त	■	मौ	■
त	ब	ला	■	क	बू	त	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

1वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है,व्यय मेंकमी होगी, व्यवसाय मेंसुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम केउपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्ययहोगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय मेंवृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र मेंवृद्धि होगी, यश कीर्ति बढ़ेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को शत्रु षड्यंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अपनी कार्यक्षमता का परिणाम सुखद प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बचपन से स्वस्थ्य और युवावस्था में सामान्य कष्टों से पीड़ित रहेगा, किन्तु शीघ्र ही स्वस्थ्य हो जायेगा. विद्या के क्षेत्र में अग्रणी होगा. किसी खास विद्या का ज्ञाता होगा. माता पिता का भक्त होगा. विदेश यात्रा योग भी बनता है.

उदयकालीन ग्रह चाल

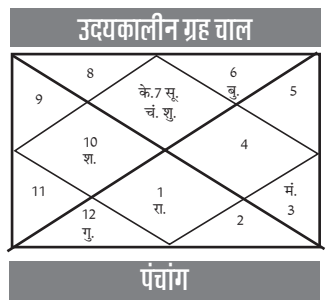

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल त्रयोदशी भौमवासरे प्रातः 6/33, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे दिन 2/59, गण्ड योगे दिन 3/31, तैतिल करणे सू.उ. 5/53, सू.अ. 6/7, चन्द्रचार सिंह रात 9/7 से कन्या, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड रूई, कपास, जूट, पाट, बारदाना गेहूँ जौ, चना के भाव में मंदी की चाल रहेगी. जीरा, धनियां, लालमिर्च, अजवाईन, में नरमी रहेगी. इसके बाद में तेजी होगी. भाग्यांक 3564 है.

मेष- परिश्रम प्रयासों में सफलता मिलेगी. खानपान पर ध्यान देना हितकर रहेगा. पत्राचार करते समय सावधानी रखे. धार्मिक यात्रा संभाव्य है.

वृषभ- भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति होगी. प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेगा.

मिथुन- परिश्रम के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. नियमितता बनी रहेगी. पूर्व नियोजित कार्य पूर्ण होंगे. अत्याधिक विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा.

कर्क- पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी. मांगलिक कार्यों की रूपरेखा बनेगी. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. मित्र मदद करेंगे. पराक्रम रहेगा.

सिंह- अतिथि आगमन होगा. मित्र वर्ग से मिलन होगा. पूज्य व्यक्तियों की सलाह मार्गदर्शन लाभदायक रहेगा. पुरूषार्थ बना रहेगा. धैर्य रखें.

कन्या- शुभ कार्यों में खर्च होगा. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा. लेखनादि कार्यों में समय व्यतीत होगा. व्ययभार बढ़ेगा. संयम रखकर कार्य करें.

तुला- समय पर निर्णय लिये कार्य में मानसिक प्रसन्नता बढ़ेगी. प्रयास करने पर अच्छी सफलता मिलेगी. परिश्रम की अधिकता रहेगी. साहस बना रहेगा.

वृश्चिक- आय से अधिक व्ययहोगा, किन्तु कार्य बढ़ते जायेंगे. अवरोध नहीं आयेंगे. कोई मांगलिक कार्य बनने का योग है. साहस पुरूषार्थ रहेगा.

धनु- लाभ का योग है. भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी. उच्च एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संपर्क में आने से समस्या का समाधान होगा.

मकर- आर्थिक कार्यों में सावधानी बांछनीय. मित्रता उपयोगी रहेगी. मान सम्मान और यश प्राप्त होगा. कामकाज में व्यस्तता बनी रहेगी.

कुम्भ- दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी. समय पर कार्य पूर्ण होंगे. मन मे संतोष का अनुभव होगा. स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा. पदोन्नति आदि से हर्ष होगा.

मीन- मित्रों और कुटुम्बियों के साथ रमणीक स्थल की सैर होगी. पारिवारिक प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी. मनोबल बढ़ेगा. काननी कामकाज बनेंगे.

SUDOKU 7346

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7345

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6